जनसंख्या परिवर्तन का कृषिभूमि (उपयोग पर प्रभाव "पूर्वी सिंहभूम का एक भोगोलिक अध्ययन

POPULATION CHANGE AND ITS IMPACT ON AGRICULTURAL LANDUSE IN EAST SINGHBHUM A FEOGRAPHICAL ANALYSIS

Research Guide.

डा० एमलिन मिंज
कोल्हान विश्वविधालय, चाईबासा
भूगोल विभाग (H.O.D)

Research Scholar

कमलेश्वरी भालेकर
शोध छात्रा (पी. एच. डी.)
भूगोल विभाग, कोल्हान
विश्वविधालय, चाईबासा

गावों का बदलता स्वरुप

परिचय :-

भारत सहित समस्त प्रथ्वी में सभी प्रकार की भौगोलिक परिवर्तनों में भूमी उपयोग परिवर्तन की तीव्रता सर्वाधिक है । जिसमें राज्य में भारत सरकार द्वारा मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराकर सीधे चहुमुखी विकास की प्रक्रिया से जोड़ा गया है जिसके कारण प्रत्येक राज्य के सभी जिलो में ग्रामीण समाज के कमजोर वर्गो के सामाजिक-आर्थिक स्तर की स्थानीय संसाधनों के अनुकूलतम उपयोगों द्वारा परिवर्तन किया जा रहा है । इस प्रक्रिया के अन्तर्गत आर्थिक एंव सामाजिक दोनों पहलुओ का समावेश होता है । आर्थिक पहलू से तात्पर्य यह है कि रोजगार, उत्पादन, आय एव व्यावसायिक सुविधाएँ आदि ।

अत: झारखंड सरकार पूर्वी सिंहभूम के सभी 11 प्रखण्डो के बुनियादी ढांचे को बनाकर उन्हें हर तरीके से उन्नत बनाने के लिए प्रयास कर रही है । पूर्वी सिंहभूम झारखंड में आर्थिक, सासंकृतिक और सामाजिक दृष्टि से सर्वप्रमुख जिला है । यह भारत के मानचित्र में रेखांकित विशिष्ट स्थान प्राप्त करता है क्योकि भारत की औधोगिक क्रांति का इतिहास इसी जिले के जमशेदपुर क्षेत्र के औधोगिक नगर से प्राप्त हुई है । इस जिले में सैकड़ो प्रकार के औधोगिक इकाइयों पिछले दशको से कई गुना अधिक बढ़ी है । परिणाम स्वरूप जनसंख्या परिवर्तन के परिवर्तित होने का कारण स्पष्ट समझा जा सकता है ।

गावों में जनसंख्या परिवर्तन की पृष्ठभूमि :-

पूर्वी सिंहभूम की जनसंख्या परिवर्तन का इतिहास झारखण्ड के दूसरे जिलो से सम्पूर्ण रूप से भिन्न है । यहाँ भारत की सर्वप्रथम मील उधोग टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी के नाम से स्थापना के कारण जनसंख्या का व्यापक रूप से परिवर्तन हुआ है । इस परिवर्तन में सर्वप्रमुख तथ्य उधोग को बहुत अधिक मात्रा में इस

उधोग में जनसंख्या परिवर्तन का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ा । परिणामस्वरूप पूर्वी सि० के सभी प्रखण्डो में जनसंख्या परिवर्तन को निम्न रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है ।

पूर्वी सिंहभूम जिला में 11 ब्लोक है –

1. गोलमुरी cum जुगसलाई
2. पोटका
3. पटमदा
4. बोड़ाम
5. घाटशिला
6. मुसाबनी
7. डुमरीया
8. गुड़ाबाधा
9. धालभुमगढ़
10. बहरागोड़ा
11. चाकुलिया

1. गोलमुरी cum जुगसलाई :- जमशेदपुर में ही सर्वाधिक जनसंख्या परिवर्तन दिखाई दे रही है आकड़ो के अनुसार 1901 में 17 मौजा गाँव में जमशेदपुर नगर की स्थापना हुई । वर्तमान में यह विश्व का एक मात्र ऐसा नगर है जिसकी जनसंख्या और भूमि परिवर्तन दिन – प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है । जिसको में 1901 से लेकर 2011 तक के आकड़ो में प्रदर्शित कर रही हूँ ।

2. घाटशिला :- पूर्वी सिंहभूम जिले में जमशेदपुर के बाद नगरीय क्षेत्र में घाटशिला का स्थान उच्च है क्यों कि एक औधोगिक नगर के रूप में घाटशिला का परिचय मिलता है । यह जमशेदपुर से 45 km की दूरी पर स्वर्णरेखा तट पर बसा है । मऊभंडार तांबा शोधन उधोग स्थापना से ही यहाँ एक नयी आधुनिक कालोनी इकाई के समीपो के लिए विकसित हुई । घाटशिला रेलवे स्टेशन जंक्शन के रूप में परिवर्तित हुआ ।

3. मुसाबनी :- मुसाबनी घाटशिला अनुमंडल का सबसे निकटतम प्रखण्ड है । यह मात्र खनन उधोग के लिए विकसित हुआ था। तांबा खनन उधोग के लिए नई कालोनियाँ ब्रिटिश काल में ही स्थापना प्रारंभ हो गई थी।परिणाम स्वरूप यहाँ जनसंख्या पलायन एंव भूमि उपयोग परिवर्तन बढ़ता ही जा रहा है ।

4. डुमरीया प्रखण्ड :- यह पूर्वी सिंहभूम का बहुत छोटा भाग है । प्रशासनिक दृष्टि से यह नक्सल प्रभावित है। यहाँ घाटशिला, मुसाबनी, डुमरिया से होते हुए सड़क मार्ग उड़ीसा से मिलती है । परिणामस्वरूप सड़को के किनारे भूमि उपयोग में वृद्धि हो रही है । राज्य सरकार द्वारा इस इलाके में विभिन्न सुविधाएँ विकसित करवाया जा रहा है जिससे इस प्रखण्ड में भूमि परिवर्तन हो रहा है ।

5. बहरागोड़ा :- पूर्वी सिंहभूम जिला में घाटशिला के बाद बहरागोड़ा प्रखण्ड में भूमि परिवर्तन की गति झारखण्ड बनने के बाद अधिक देखा जा रहा है । पंचायत समिति~ तहसील, सरकारी और गैर सरकारी निर्माण कार्य कृषिभूमि में ही बनने के कारण भूमि परिवर्तन बढा है । अब तो यहाँ सामान्य महाविधालय, B.Ed प्रशिक्षण संस्था कई विधालय स्थापित हो गए है ।

6. चाकुलिया :- चाकुलिया प्रखण्ड कलकत्ता, जमशेदपुर मुख्य रेलमार्ग के किनारे अवस्थित है । इस प्रखण्ड से सिंहभूम प्रदेश के सभी लोग चावल मिल उधोग, सस्ता साबुन निर्माण उधोग एंव निकटतम भागो की बांस के वनों का परिचय मिलता है परिणामस्वरूप स्वतंत्रता के बाद का यह छोटा – सा प्रखण्ड का भूमि जनसंख्या की वृद्धि द्वारा महत्वपूर्ण परिवर्तन उल्लेखित करता है ।

7. पटमदा :- पूर्वी सिंहभूम का मुख्यालय पटमदा में भूमि उपयोग धीरे – धीरे परिवर्तित हो रहा है । पटमदा का सम्पर्क पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बाकुड़ा, पुरुलिया, बलरामपुर आदि तक है । इस प्रखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों से हजारो क्विंटल साग – सब्जियाँ बाजार में बेचे जाते है ।

8. बोड़ाम :- बोड़ाम प्रखण्ड की स्थापना 2014 – 15 में किया गया । यहाँ चौड़ी सड़के बनने के बाद भूमि परिवर्तन बढ़ने लगा है। प्रखण्ड के विभिन्न भागो में कई एक उच्च महाविधालय स्थापित है । यहाँ तकनीकी विधालय (IIT) की भी स्थापना हुई है । जिससे गाँव का विकास तेजी से हो रहा है ।

9. धालभुमगढ़ :- यह 60km की दूरी पर स्थित है, यहाँ की कुल जनसंख्या 61,932 है । यहाँ कुल 158 गाँव और 16 पंचायत है । कुल किसानो की संख्या 3,551 है । जिसमे 2,266 पुरुष और 1,285 महिलाएँ

है ।

पूर्वी सिंहभूम के आय में वृद्धि के अनेकों योजनाएं एंव प्रयास किये जाने के कारण जनवृद्धि एंव भूमि उपयोग परिवर्तन देखा जा रहा है । प्राय: सभी गाँवों में डोभा का निर्माण राज्य सरकार की योजना है जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि, पशुचालन में वृद्धि जलसंकट से मुक्ति का प्रयास किया गया है ।

प्रखण्ड	2007 का सर्वेक्षण	2017 का सर्वेक्षण
मुसाबनी	13578	17240
धालभूमगढ़	5001	10055
डुमरिया	4821	11872
पटमदा	10108	17784
जमशेदपुर	4750	16234
गुडाबांधा	17335	9472
पोटका	7296	33315
घाटशिला	12279	22034
चाकुलिया	10287	21230
बहरागोड़ा	18760	32224
बोड़ाम	114360	14528
कुल	114360	205988

Reference Books :-

1. Ahmad E the soil of Bihar – 1994 Page No – 68
2. Sourees of S.G.I 2016.
3. Jamshedpur city total area magazine – 2014 13 July
4. P.O व्यक्तिगत विश्लेषण
5. sathpathy D.D.P Gemophelogy page no - 68